Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> **नारी**
>
> आ तो लाज करें, घणी,
> न देखाले मुख नें आंख।
> पिण गाल्यां गावण नें उसरी,
> जांणें कपड़ा दीधा न्हांख।।
>
> नारी लाज बहुत करती है। वह मुख और आंख दिख न जाए इसलिए पर्दा रखती हैं, गालियां गाने लगती है तो मानो कपड़े ही डाल दिए।
>
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली | ● वर्ष 27 ● अंक 07 ● 17 नवम्बर - 23 नवम्बर, 2025 | प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 15-11-2025 ● पेज 12 | ₹ 10 रुपये

शरीर और बुद्धि का उपयोग हो धार्मिक विकास के लिए : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

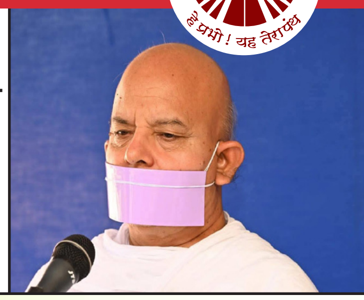

छोटे-छोटे व्रत से आध्यात्मिक जीवन को करें बड़ा : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

धर्माचरण को कल पर न छोड़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

सलाल।
10 नवम्बर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी करीब 12 कि.मी. का विहार कर पहुंचे सलाल। अमृत देशना प्रदान करते हुए गुरुदेव ने फरमाया कि किसी व्यक्ति को धर्म करने की प्रेरणा दी जाए और सामने वाला उसे कल पर छोड़ दे, तो कल पर छोड़ने का अधिकार तीन मनुष्यों को होता है। पहला, वह जिसकी मौत से दोस्ती हो और वह मौत को जो बात कहे, वह मान ले।

दूसरा, वह जो इतना तेज दौड़ता हो कि यदि मौत उसका पीछा करे तो वह उसे पकड़ न पाए। और तीसरा, वह मनुष्य जिसने अमरत्व को प्राप्त कर लिया हो। और दुनिया में शायद ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा जो इस प्रकार के अधिकार रखता हो। सृष्टि का अपना नियम है कि कोई भी प्राणी स्थायी नहीं है। जिस प्राणी ने जन्म लिया है, उसका अवसान अवश्यंभावी है। यह शरीर नश्वर है, ऐसी स्थिति में हमें धर्म करना चाहिए। तीन चीजें – मृत्यु, बुढ़ापा और बीमारी – किसी के नहीं आएंगी, ऐसी कोई भी गारंटी नहीं ले सकता। इसलिए व्यक्ति को अपनी आत्मा पर ध्यान देने का प्रयास करना चाहिए। आत्मा शाश्वत है, अतः व्यक्ति को अपनी आत्मा के कल्याण का प्रयास करना चाहिए। साधु बनकर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की साधना तो बहुत बड़ी बात है। सामान्य गृहस्थ भी अपने जीवन में जितना संभव हो सके, धर्म और अध्यात्म के द्वारा अपनी आत्मा के कल्याण का प्रयास करे। सौभाग्य से प्राप्त इस मानव जीवन में धर्म की साधना करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि वर्ष 2023 में भी सलाल आना हुआ था और आज भी यहां आना हो गया। सलाल वासियों में खूब धर्म की भावना बनी रहे।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरांत साध्वीप्रमुखा श्री जी ने श्रद्धालुओं को उद्बोधित करते हुए कहा कि महापुरुषों का सान्निध्य मिलने पर व्यक्ति के जीवन की धारा बदल जाती है, चिंतन में स्वस्थता और सकारात्मकता आती है, व्यक्ति की सोच सही हो जाती है। यह तब संभव होता है जब व्यक्ति को एक उच्च आभामंडल वाले व्यक्ति का संयोग मिलता है। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का गायन किया। नन्हीं बालिकाओं ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। प्रियंका चौरड़िया व प्रकाश चौरड़िया ने भी अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

धर्माचरण बनेगा आत्मा की पूंजी : आचार्यश्री महाश्रमण

प्रांतीज।
09 नवम्बर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी 12 कि.मी. का विहार कर प्रांतीज के आवर ऑन विद्याविहार में पधारे। पावन देशना प्रदान करते हुए उन्होंने फरमाया कि हमारे इस जगत में नित्यता भी है और अनित्यता भी है। आत्मा का अंख्येय प्रदेशात्मक रूप नित्य है, इसमें कोई अंतर नहीं आता। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय आदि द्रव्य पुद्गल हैं। ये द्रव्य हमेशा थे और रहेंगे। यह हमारी दुनिया की नित्यता है। साथ में अनित्यता भी है क्योंकि पर्याय परिवर्तन होता रहता है। एक जीव जो वर्तमान में मनुष्य है, वह कभी मनुष्य गति छोड़कर देवगति में जा सकता है। इसी प्रकार अभी जो जीव देवगति में है, वह देवगति को छोड़कर तिर्यंच अथवा मनुष्य गति में आ सकता है। व्यक्ति बालक से जवान और जवान से वृद्ध हो जाता है। इस प्रकार एक मनुष्य जीवन में भी पर्याय परिवर्तन हो सकता है। गांवों और नगरों में भी परिवर्तन हो जाता है। यह अनित्यता है।

व्यक्ति का जीवन और शरीर भी अनित्य है। आत्मा कभी मरती नहीं है, पर शरीर का विनाश हो जाता है। इसलिए व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि मैं इस अनित्य जीवन में नित्य आत्मा के कल्याण के लिए कुछ प्रयास करूं। बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा कोई भी व्यक्ति हो, मृत्यु की पकड़ से कोई छूट नहीं सकता।

(शेष पेज 9 पर)

शरीर और बुद्धि का उपयोग हो धार्मिक विकास के लिए : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीनगर।
06 नवम्बर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रेक्षा विश्व भारती कोबा से लगभग 12 किमी का विहार कर विश्व मैत्री धाम पधारे। परिसर में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन पाथेय प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि मनुष्य जन्म मिलना एक विशेष बात मानी जा सकती है। व्यक्ति चिंतनशील होता है, उसके पास मस्तिष्क होता है, बुद्धि होती है, पढ़ाई कर सकता है और अच्छा निर्णय ले सकता है। साथ ही धर्म की सर्वोच्च कोटि की साधना भी व्यक्ति कर सकता है।

साधना के लिए मनुष्य साधु बन जाते हैं। जैन साधु की साधना से पांच महाव्रत जुड़े हुए हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूपी पंचामृत साधु में होते हैं। करोड़ों मनुष्य साधु बन जाते हैं और कितने-कितने मनुष्य केवलज्ञानी बनकर मोक्ष को भी प्राप्त हो जाते हैं। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की साधु परंपरा में चातुर्मास के दौरान सामान्यतया एक स्थान पर प्रवास करना और चातुर्मास की संपन्नता पर मार्गशीर्ष कृष्णा एकम को प्रस्थान कर देना परंपरा है। शारीरिक अक्षमता न हो और कोई विशेष परिस्थिति न हो तो सामान्यतया मार्गशीर्ष कृष्णा एकम को विहार कर देना। संतों के विचरण से भी कल्याण का कार्य हो सकता है। संतों के उपदेश, प्रवचन, बातचीत व दर्शन से अनेक लोगों की चेतना में अध्यात्म का सूर्योदय हो सकता है और अध्यात्म का विकास हो सकता है। संतों की वाणी और उपदेशों पर लोगों की श्रद्धा भी होती है।

किसी को साधुता, संन्यास प्राप्त होना बहुत बड़ी बात होती है। सबको साधुता न भी मिले, परंतु जो सामान्य गृहस्थ हैं उनका जीवन भी अच्छा रहे, उनके जीवन में सद्गुणों का विकास हो। गृहस्थ विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनकर शरीर को अलंकृत करते हैं, परंतु आत्मा सद्गुणों से अलंकृत हो सकती है। जहां बाह्य आभूषण धारण किए जाते हैं, वहीं स्थानों पर सद्गुण रूपी भूषण धारण करने चाहिए। हाथ से दान देना हाथ का आभूषण होता है। गुरुचरणों में वंदन करना सिर का आभूषण है। झूठ नहीं बोलना वाणी का आभूषण है। प्रवचन सुनना, शास्त्रों की वाणी सुनना आदि कान के आभूषण हैं। भुजाओं का आभूषण किसी की सेवा करने में होता है। इन सद्गुण रूपी आभूषणों से व्यक्ति के जीवन का कल्याण हो सकता है। हम अपने जीवन में धार्मिक आभूषण धारण करने का प्रयास करें, तो उनसे हमारी आत्मा पवित्र बन सकती है। अतः यह मनुष्य जीवन हमें प्राप्त हुआ है, उसमें हम अधिक से अधिक धार्मिक आराधना करें और आत्मकल्याण की साधना करें।

मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्य प्रवर के समक्ष आचार्यश्री तुलसी दीक्षा शताब्दी वर्ष के दौरान जाणुन्दा में होने वाले प्रवास से संबंधित बैनर का लोकार्पण जाणुन्दा निवासी मूलचंद नाहर आदि द्वारा किया गया। योगक्षेम प्रवास व्यवस्था समिति लाडनूं के अध्यक्ष प्रमोद बैद ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

धर्म के प्रति बनी रहे श्रद्धा : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
05 नवम्बर, 2025

वीतराग पथ साधक महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण ने इस चातुर्मास के अंतिम दिन पावन पाथेय प्रदान करते हुए राजा प्रदेशी व मुनि कुमार श्रमण केशी के प्रसंग का वर्णन करते हुए फरमाया कि श्वेतांबिका नगरी का राजा प्रदेशी नास्तिक विचारधारा का व्यक्ति था। उसके सारथी का नाम चित्त था। एक बार मुनि कुमार श्रमण केशी नगर के बाहर उद्यान में आते हैं और राजा प्रदेशी का सारथी चित्त युक्ति द्वारा राजा प्रदेशी को भी उद्यान में ले जाता है। राजा प्रदेशी ने मुनियों को देखकर सारथी चित्त से पूछा कि ये कौन हैं? सारथी ने कहा कि यहां मुनि कुमार श्रमण केशी अपने पांच सौ शिष्यों के साथ विराज रहे हैं, और उनकी मान्यता है कि आत्मा और शरीर अलग-अलग हैं। राजा प्रदेशी की मान्यता थी कि आत्मा और शरीर अलग-अलग नहीं, बल्कि एक ही है।

राजा प्रदेशी मुनि कुमार श्रमण केशी के पास पहुंचता है और दोनों के बीच मानों शास्त्रार्थ प्रारंभ होता है। मुनि कुमार श्रमण केशी ने कहा कि हमारा सिद्धांत है कि आत्मा अमर है। मृत्यु के बाद भी आत्मा का नाश नहीं होता। प्रदेशी ने कहा कि मैं इसे नहीं मानता। आत्मा और शरीर एक ही हैं; शरीर की मृत्यु के साथ ही आत्मा भी नष्ट हो जाती है।

मुनि कुमार श्रमण केशी राजा प्रदेशी के प्रत्येक प्रश्न का अपने तर्कों द्वारा उत्तर देते हैं। अपने सभी प्रश्नों के समाधान पाकर राजा प्रदेशी अपनी नास्तिक विचारधारा का परित्याग करता है तथा आस्तिक विचारधारा स्वीकार करता है। राजा प्रदेशी मुनि कुमार श्रमण केशी से बारह व्रत स्वीकार कर श्रमणोपासक बन जाता है। इस कथा के माध्यम से पूज्य गुरुदेव ने उपस्थित जनता को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि अब हमें विहार करना है। आप सभी इस कथा से प्रेरणा लेकर इन चार महीनों में जो भी व्रत, नियम, संकल्प स्वीकार किए हैं, उनका सजगता से पालन करने का प्रयास करें। रमणीय बनकर अरमणीय नहीं बनना। जीवन में धर्म के प्रति श्रद्धा बनी रहे। धर्म की भावना बनी रहे, जीवन में आध्यात्मिकता रहे। आत्मा अलग और शरीर अलग — इस आस्तिकवाद के सिद्धांत को मानकर जीवन में यथासंभव धार्मिक कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। वर्तमान में आचार्य श्री भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष चल रहा है। यह चातुर्मास काल अब संपन्न हो रहा है और आगे विहार करना है। सभी श्रावकों में धर्म की भावना बनी रहे।

पूज्य गुरुदेव के मंगल प्रवचन के पूर्व मंगल भावना समारोह का आयोजन हुआ। इस क्रम में डॉ. अनिल जैन, चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामचंद लूणिया, डॉ. धीरज मरोठी, स्वागताध्यक्ष भैरूलाल चौपड़ा आदि ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ कन्या मंडल अहमदाबाद ने अपनी प्रस्तुति दी। मंगल प्रवचन के पश्चात मंगल भावना समारोह के दूसरे चरण में भी श्रद्धालुओं ने अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ युवक परिषद, उत्तर अहमदाबाद के सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी। मंगल भावना समारोह का संचालन चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री अरुण बैद ने किया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने सम्पूर्ण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति को बधाई दी तथा छोटी खाटू में आयोजित होने वाले मर्यादा महोत्सव में पधारने हेतु श्रावक समाज को आमंत्रित किया। इसके साथ ही दायित्व हस्तांतरण का उपक्रम भी हुआ और इस संदर्भ में अभिव्यक्ति दी गई। मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। चातुर्मास व्यवस्था समिति के सदस्यों ने मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के सदस्यों को जैन ध्वज हस्तांतरित किया। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में मंगल पाठ सुनाते हुए प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

गुरु की कृपा दृष्टि में ही समाहित है सफलता की संभावना

आदर्श नगर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा आदर्श नगर द्वारा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी लक्ष्यप्रभाजी आदि ठाणा-3 के पावस प्रवास की परिसंपन्नता पर मंगल भावना समारोह का आयोजन उनके सान्निध्य में आदर्श नगर स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत साध्वी लक्ष्यप्रभाजी द्वारा उच्चारित नमस्कार महामंत्र से हुई। पूर्व पार्षद एवं चंदा जैन, पूर्व व्याख्याता मंजु जैन, महिला मंडल कोषाध्यक्ष धनलक्ष्मी जैन, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु जैन, तेरापंथी सभा सवाई माधोपुर के सक्रिय श्रावक नरेन्द्र जैन झंडे वाले, नन्ही बालिका कमीक्षा जैन, युवक परिषद अध्यक्ष भीकम जैन, पूर्व प्रधानाचार्य शोभा जैन, सभा अध्यक्ष कमलेश जैन एडवोकेट, महिला मंडल सदस्या गीतेश जैन, पोरवाल समाज के पूर्व महामंत्री रतन लाल जैन, प्रशिक्षिका सीमा जैन, पूर्व पार्षद एवं प्रशिक्षिका सुमिता जैन सिम्मी, पूर्व प्रधानाचार्य एवं उपासक चन्द्रप्रकाश जैन, भक्तिरस में लीन रेणु चौहान, सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं तेरापंथी सभा मंडी रोड के अध्यक्ष अनिल जैन एडवोकेट, पूर्व शिक्षा अधिकारी एवं वरिष्ठ उपासक रामेश्वर प्रसाद जैन आदि श्रावक श्राविकाओं ने चातुर्मास की उपलब्धियों की जानकारी दी। साध्वीवृन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। सभी ने साध्वीवृन्द के मंगल बिहार हेतु शुभ भावनाएं व्यक्त की।

इस अवसर पर महिला मंडल, युवक परिषद, कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बालक बालिकाओं व प्रशिक्षिकाओं द्वारा सामूहिक गीतिकाओं की सुमधुर प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला के नन्हें मुन्नों द्वारा साध्वीवृन्द के व्यक्तित्व को दर्शाने वाले लघु नाटिका द्वारा भावाभिव्यक्ति दी गई। सभा के मंत्री नरेन्द्र जैन ने साध्वीश्री के पावस प्रवास में ज्ञान,दर्शन,चरित्र व तप के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों की जानकारी दी व चातुर्मास व्यवस्था में सहयोग देने वाले श्रावक समुदाय की प्रशंसा करते हुए सभा की ओर से आभार व्यक्त किया।

साध्वी लक्ष्यप्रभाजी ने अपने प्रेरणादाई उद्बोधन में पावस प्रवास में प्राप्त उपलब्धियों को परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी की दृष्टि व कृपा का परिणाम बतलाते हुए गुरु की महिमा का बखान किया। उन्होंने श्रावक-श्राविकाओं को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनकर सतत् क्रमशील बनने की प्रेरणा दी।

ज्ञानशाला को भविष्य की आधारशिला मानते हुए नियमित ज्ञानशाला संचालन करने की सीख दी। उन्होंने श्रावक समाज को प्रवचनों के माध्यम से जो कुछ भी सीखा उसको जीवन अंग बनाने की बात भी कही। मंगल भावना समारोह का कुशल संचालन मंत्री नरेन्द्र जैन ने किया। साध्वीश्री तेरापंथ भवन आदर्श नगर से विहार कर राजनगर पधारेगी व आगामी जनवरी मास में गुरु सन्निधि में उपस्थित होगी।

मंगल भावना समारोह

आमेट।

तेरापंथ सभा भवन में विराजित साध्वी सम्यकप्रभा जी ठाणा-4 का चातुर्मास संपन्नता पर मंगल भावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। साध्वी सम्यकप्रभा जी द्वारा हाजरी का वाचन किया गया। साध्वी मलयप्रभा जी ने फरमाया कि आपने चार माह में जो पाया है उसका सिंचन करें और तप, त्याग, आध्यात्मिक और धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़कर विकास करें। आमेट के श्रावकों की सेवा भावना की प्रशंसा की।

चातुर्मास केवल तपस्या के लिए नहीं है बल्कि आत्मशुद्धि का उत्सव है। जब व्यक्ति अपने भीतर की नकारात्मकता को त्याग कर सकारात्मकता को अपनाता है तभी सच्चे अर्थों में जीवन का विकास होता है।

इस अवसर पर मंगल भावना में तेरापंथ सभा अध्यक्ष यशवंत कुमार चोरड़िया, निवर्तमान अध्यक्ष देवेंद्र कुमार मेहता, संरक्षक महेंद्र बोहरा, उपाध्यक्ष ज्ञानेश्वर मेहता, हस्तीमल पामेचा, कौशल मेहता, उपासक शांतिलाल छाजेड़, वयोवृद्ध श्रावक मूलचंद बोलिया, सहमंत्री अशोक पितलिया, प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक मिश्रीलाल चौधरी, पूर्व अध्यक्ष दलीचंद कच्छारा, नरेंद्र श्री श्रीमाल, jtn प्रतिनिधि पवन कच्छारा, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू हिरण, मंत्री संगीता चिंडालिया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका कोमल भंडारी,अणुव्रत समिति अध्यक्षा रेणु छाजेड़, व महिला मंडल द्वारा विदाई गीतिका व संभाषण द्वारा अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

ज्ञानशाला के नन्हे-नन्हे बच्चों ने परिसंवाद द्वारा मीठी-मीठी मनुहार से साध्वीश्री को आमेट में अधिक से अधिक विराजने का निवेदन किया। संपूर्ण श्रावक समाज ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञा ज्ञापित की। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री मनोहर लाल पितलिया ने किया। मंगल भावना समारोह में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों का मंगल भावना कार्यक्रम आयोजित

केजीएफ।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्या साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य मे ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी द्वारा मंगल भावना का आयोजन किया गया। रात्रिकालीन प्रवचन में साध्वी पावनप्रभाजी ने अर्हत वन्दना के तत्त्वपशचात महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण की सुंदर प्रस्तुति हुयी।

महिला मंडल अध्यक्ष सरिताबाई बांठिया, सभा के अध्यक्ष सुदर्शन बांठिया, युवक परिषद के अध्यक्ष चेतन बांठिया, जसवंतराज बांठिया, भँवरीबाई हिंगड, सभी ने साध्वीवृंद के प्रति अपने मंगल भाव प्रकट किये।

ज्ञानशाला के सभी प्रशिक्षक व प्रशिक्षिकाएँ व संदीप सेठिया द्वारा सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों ने पूरे चातुर्मास में हुए कार्यक्रम जैसे पारिवारिक सेवा, पूरे दिन की साध्वियों की चर्या, पचरंगी तप, पर्यूषण पर्व पर अखण्ड जप, गुरुदर्शन के लिए श्रावकों को तैयार करवाना, तपस्या के लिए श्रावको को प्रेरणा देना, मासखमण की तपस्या से साध्वीश्री की झोली भरना, पूरे कार्यक्रम की झलकियों की सुंदर प्रस्तुति देख सारा वातावरण आनंदित हो गया।

बच्चों को साध्वियों के वेशभूषा में देखकर व उनकी रुबरु को देखकर सारा वातावरण मंत्रमुग्ध हो गया। साध्वी पावनप्रभाजी ने फ़रमाया कि ये जो चलचित्र बच्चों ने प्रस्तुत किया है उसे अगर वास्तविकता में बदल दिया जाये तो इस सोने की नगरी से हम खरा सोना गुरुदेव को भेट कर सकते हैं। ज्ञानशाला के संयोजक कमलेश हिंगड ने बहुत ही सुंदर संचालन किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविका और ज्ञानार्थी जन सभी की बहुत अच्छी उपस्थिति रही।

संथारा साधिका का गुणानुवाद

जयपुर। अणुविभा केंद्र स्थित 'मंत्रीमुनि' सुमेरमल जी स्मृति स्थल पर मंगलवार को संथारा साधिका 'शासनश्री' साध्वी विनयश्री जी की सान्निध्य में चार तीर्थ का संगम हुआ। इस अवसर पर तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का पावन संदेश प्राप्त हुआ। जिसे चार तीर्थ की उपस्थिति में मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने पढ़कर सुनाया। मौके पर 'शासनश्री' साध्वी मधुस्मिता जी ने स्वरचित गीत का मधुर संगान कर संथारा साधिका साध्वीश्री का गुणानुवाद किया। तेरापंथ सभा जयपुर अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा ने साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का प्राप्त मंगल सन्देश पढ़कर सुनाया। मौके पर संथारा साधिका साध्वीश्री की सहवर्ती साध्वियां जगवत्सला जी, अतुलप्रभा जी, साध्वी मधुस्मिता जी की सहयोगी साध्वियां सहजयशा जी, साध्वी अक्षयप्रभा जी, साध्वी प्रदीपप्रभा जी व साध्वी धन्यप्रभा जी तथा संथारा साधिका के संसार पक्षीय परिजन, श्रावक-श्राविकाएं मौजूद थे।

आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष के तहत प्रतियोगिता का आयोजन

बायतु।

तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य भिक्षु की मर्यादा, आचार, विचार एवं उनके जीवन पर आधारित प्रश्न किए गए। इस अवसर पर साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन को समझ कर व्यक्ति अपनी आत्मा का उत्थान कर सकता है अनुशासित मर्यादित जीवन आचार्य भिक्षु की विशेष पहचान है। विद्यार्थी जीवन में भी अनुशासन में रहकर विद्या अर्जन की जाए तो उसका प्रभाव भी व्यापक फलदायी होता है। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पीयूष बालड़, भारती बालड़, संगीता देवी ग्रुप, द्वितीय स्थान कोमल सिंघवी, दिशा भंसाली, दीपिका बालड़ ग्रुप, तृतीय स्थान सीमा बुरड़, ट्विंकल भंसाली, ख़ुशी मालू ग्रुप सहित सभी प्रतियोगियों को नवीन कुमार, गौतम चौपड़ा, गिरधर चौपड़ा परिवार की ओर से पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता में 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया। साथ में चंदन बालिका नाट्य, शिशु संस्कार बोध के प्रतिभागियों को तेरापंथ सभा, राकेश जैन, दिनेश कुमार, नेमीचंद अमृतलाल बालड़ एवं गौतम चौपड़ा परिवार की ओर से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर साध्वी मधुरयशा जी, साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी धवलप्रभा जी, साध्वी मार्दवयशा जी का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन साध्वी श्वेतप्रभा जी ने किया। इस अवसर पर संरक्षक नेमीचंद छाजेड़ सभा अध्यक्ष राकेश जैन, कोषाध्यक्ष मदनलाल बालड़, जेठमल छाजेड़, पुखराज बालड़, अशोक मंडोत, नेमीचंद बालड़ महिला मंडल अध्यक्षा अनिता जैन, मनोज चौपड़ा आदि उपस्थित रहे।

आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए। — आचार्य श्री महाश्रमण

सात दिवसीय अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का समापन समारोह

हैदराबाद।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी डॉ. गवेषणा जी आदि ठाणा- 4 के पावन सान्निध्य में सात दिवसीय अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का समापन समारोह धूमधाम से तेरापंथ भवन डी. वी. कॉलोनी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र से किया गया। जीवन विज्ञान पर अणुव्रत समिति की बहनों द्वारा बदले युग के द्वारा से सुमधुर मंगलाचरण किया गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा ने सभी का स्वागत किया। प्रियंका नाहटा स्कूल मेनेजमेंट सेल कोर्डिनेटर जीवन विज्ञान विभाग ने जीवन विज्ञान विषय पर अपने सारगर्भित वक्तव्य रखें। श्वास हमें सही कैसे लेना बताया।

इस अवसर पर साध्वी डॉ.गवेषणाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा - जीवन विज्ञान के महत्वता को देते हुए कहा जीवन विज्ञान जीने की कला है। कलापूर्ण जीवन ही श्रेष्ठ होता है। जीवन विज्ञान का उद्देश्य स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण करना है। जीवन विज्ञान स्वस्थ समाज की संरचना का एक प्रयोग है। मौजूदा शिक्षा पद्धति और संतुलित है। इसमें शारीरिक विकास, मानसिक विकास, भावनात्मक विकास आदि के विकास के लिए गतिविधियां होती है बुद्धि विकास के लिए भी प्रयास किए जाते हैं। जीवन विज्ञान के रूप में हमारे पास इस समस्या के कई समस्याओं का समाधान है जैसे साध्वीश्री ने कहा A एसिडिटी- एसिडिटी से हम किस तरह बच सकते हैं हम कैसे मुक्त हो सकते हैं इस बारे में जानकारी, B बीपी, C कोलेस्ट्रॉल, D डिप्रेशन डायबिटीज- आदि से हम कैसे बच सकते हैं। इनके छोटे छोटे सरल उपाय बताये। हमें अपनी प्रकृति व परिवेश को समझ लेना चाहिए। प्राकृतिक आहार लेने से जहां धन, श्रम, समय व खाद्य की बचत होगी। वहीं बाहरी रासायनिक तत्वों की मिलावट का भय भी नहीं रहेगा। प्राकृतिक आहार स्वस्थ रहता है साथी हमारा शरीर निरोगा, फुर्तीला, सबल, और पुष्ट रहेगा।

प्राकृतिक अवस्था में खाना हितकर वह कल्याणकारी होता है। हर ऋतु में प्रकृति वहीं खाद्य वस्तुएं उत्पन्न करती है जिनसे रोगों का शमन होने में मदद मिलती है तथा जिन्हें खाने से उसे ऋतु के अनुसार पोषण मिलता है जिससे हमारी आयु लंबी व काया निरोगी बनती है।

सात्विक या प्राकृतिक खाद्य पदार्थों का सेवन करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है. सात्विक भोजन करने वाले के मन आत्मा और शरीर तीनों शुद्ध और पवित्र होते हैं इसलिए सदैव सात्विक आहार ग्रहण करना चाहिए जिससे शरीर निरोगी वह दीर्घायु बनता है।

हमारे शरीर का एंटीना मेरुदंड शक्ति केंद्र है। पृष्टरज्जू के निचला हिस्सा है, निचे से मस्तिष्क तक हमारी ऊर्जा जाती है। अवचेतन व चेतन मन को ब्लेन्स करता है। हमें सही पोजीशान में सीधा बैठना चाहिए।

साध्वी श्री ने थायराइड को संतुलित करने के सरल क्रिया बताई, कई यौगिक क्रिया की जानकारी दी हमें अपनी दिनचर्या में करने से स्वस्थ रह सकते है। ज्ञान केंद्र पर बुद्धि विकास, ज्ञान विकास के प्रयोग का ध्यान करवाये। साध्वी मयंक प्रभा जी ने अपनी उद्बोधन में कहा पहले खुद जीवन विज्ञान को समझें और फिर इसे आसपास के लोगों को समझाएं आज अणुव्रत और जीवन विज्ञान की जुगलबंदी अपनी व्यापक प्रभावशीलता के साथ आगे बढ़ाने को तत्पर है वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी अणुव्रत आंदोलन को नई ऊंचाइयों पर देखना चाहते हैं। साध्वी मेरुप्रभा जी ने जीवन विज्ञान पर ओजस्वी भावपूर्ण गीतिका की प्रस्तुति दी। साध्वी दक्ष प्रभा जी ने जीवन विज्ञान के प्रोग्राम का कुशल संचालन के साथ सु मधुर गीतिका का सांगान किया एवं आभार ज्ञापन संतोष गुजरानी ने किया। प्रकृति की प्रहरी जो हैदराबाद में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आए उनके रिजल्ट अणुव्रत समिति की मंत्री रीता सुराणा ने सभी को जानकारी दी व महिला मंडल के तत्वावधान में होने वाले 9 अक्टूबर के प्रोग्राम की जानकारी दी गई। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष अनिलजी कातरेला व अशोक मैडतवाल सिकंदराबाद सभा के मंत्री हेमंत संचेती आदि उपस्थित थे। साध्वीश्री के मंगल पाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ।

मुमुक्षु अभिनंदन समारोह आयोजित

बायतु।

तपागच्छ सम्प्रदाय अहमदाबाद में संयम ग्रहण करने वाली मुमुक्षु दिव्या का अभिनंदन समारोह उपखण्ड मुख्यालय स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी जिनरेखा ने कहा मोह को त्याग कर दीक्षा रूपी संयम जीवन को स्वीकार करने के लिए आगे बढ़ा जा सकता है। दीक्षा लेना मानवभव की श्रेष्ठतम साधना है।

साध्वी श्वेतप्रभा जी ने कहा मुमुक्षु दिव्या को बचपन से देखा साधना के पथ को स्वीकार कर अपने जीवन को उज्ज्वल बना रही है। साध्वी धवलप्रभा जी ने कहा जिनके कर्मों की पुण्याई उदय में आती हैं वही व्यक्ति इस मार्ग को स्वीकार करता है। साध्वी मार्दवयशा ने कहा संयम पथ भव-भव के बंधनों से मुक्ति का मार्ग है। साध्वी मधुरयशा जी का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर मुमुक्षु दिव्या चौपड़ा ने अपने ननिहाल की यादों को जीवंत कर अपने वैराग्य जीवन के अनुभव साझा करते हुए कहा कि संयम-साधना मोक्ष मार्ग की तरफ़ जाने का एक माध्यम है। सभी व्यक्ति जीवन में छोटे- छोटे संकल्पों के माध्यम से भी अपने जीवन को संयमी बना सकते हैं मुमुक्षु दिव्या ने माता पिता एवं ननिहाल परिवार के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अहमदाबाद में भगवती दीक्षा समारोह में आमंत्रित किया। इस अवसर पर मामा मदनलाल बालड़, तेरापंथ कन्या मंडल ने वक्तव्य व भाषण के माध्यम से मुमुक्षु के प्रति मंगल कामना की।

नेमीचंद अमृतलाल बालड़ परिवार, तेरापंथ सभा, महिला मंडल, कन्यामंडल द्वारा मुमुक्षु बहिन का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया। कार्यक्रम में नेमीचंद छाजेड़, सभा अध्यक्ष राकेश जैन, नेमीचंद बालड़, कोषाध्यक्ष मदन बालड़, महिला मंडल अध्यक्षा अनिता जैन, वीर माता सुशीला चौपड़ा, कन्यामंडल संयोजिका हर्षिता भंसाली आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी श्वेतप्रभा जी ने किया।

धार्मिकता, नैतिकता, मानवता का आधार है- करुणा भाव

जयपुर।

भिक्षु साधना केंद्र में चार मास का ऐतिहासिक पावस प्रवास संपन्नकर मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभवकुमार जी ने गुरुवार को भव्य रैली के साथ विहार किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने संतों को भावपूर्ण विदाई दी। प्रस्थान से पूर्व संतों ने महामुनि केशी स्वामी और राजा परदेशी का व्याख्यान सुनाया। मुनि श्री तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने प्रवचन में कहा - नास्तिक-आस्तिक का संबंध धर्म में आस्था रखने - नहीं रखने से है। अच्छा इंसान बनना व्यक्ति का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। चाहे वह आस्तिक हो अथवा नास्तिक। मुनिश्री ने कहा - करुणा मानवता का सर्वोपरि गुण है। करुणा की चेतना के जागरण से ही स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। करुणा का भाव धार्मिकता नैतिकता और मानवता का आधार है। मुनि संभवकुमार जी ने कहा - संत जन करुणा के अवतार होते हैं। इसलिए कहा जाता हैं - संतों की संगति से पापी भी पावन और क्रूर भी करुणावान बन जाता है। घृणा पापी से नहीं पाप से होनी चाहिए। संतद्वय प्रवचन के तत्काल बाद भिक्षु साधना केंद्र से विशाल जुलूस के साथ विहार कर श्याम नगर मेट्रो स्टेशन के निकट श्रीमान शांतिलाल जी भंसाली के निवास पर पहुंचे। जहां महावीर भगवान की स्तुति में सामूहिक गीत का संगान हुआ। संतों के मंगलपाठ और मंगल आशीर्वाद के साथ रैली का समापन हुआ।

महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस को जीवन विज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया

आमेट।

अणुव्रत समिति आमेट द्वारा महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस जीवन विज्ञान दिवस के रूप में तेरापंथ सभा भवन, तुलसी अमृत विद्यापीठ इंग्लिश व हिंदी मीडियम में त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी सम्यकप्रभा जी ने फरमाया कि आचार्य महाप्रज्ञ जी को श्रद्धा पूर्वक नमन कर उनके द्वारा किए गए जनोपयोगी कार्यों व मानव जाति को दिए कल्याणकारी अवदानों की चर्चा की। अणुव्रत समिति अध्यक्ष रेणु छाजेड़ ने कहां की जन-जन में नैतिक, मानवीय मूल्यों का विकास का उपक्रम है जीवन विज्ञान। इसी के तहत विद्यार्थियों को योगीक्रिया, दीर्घ श्वास के प्रयोग करवाया। विद्यार्थियों को मोबाइल कम उपयोग करने जानकारी दी। इसी प्रेरणा से ऋषभ डांगी ने 3 साल के लिए मोबाइल का त्याग किया। प्राचार्य प्रहलाद चंद्र शर्मा ने अणुव्रत समिति कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर छात्र का जन्म दिवस मनाया गया एवं उसे संकल्प दिलाया गया। छात्र दिव्यांश ने यह संकल्प लिया कि मैं आज पूरे दिन झूठ नहीं बोलूंगा एवं झूठ का सहारा नहीं लूंगा। इस कार्यक्रम में अणुव्रत समिति अध्यक्षा रेणु छाजेड़, मंत्री अनिता छाजेड़, उपाध्यक्षा चेतना डांगी, स्थानीय विद्यालय के प्रफुल्ल शर्मा, मधु माहेश्वरी, मीना कुमावत, पूनम पुरोहित, मनु सांखला, कृतिका कच्छारा, ज्योति पुरोहित, अंकित सिंह भाटी, तुलसीराम आदि 450 विद्यार्थियों की उपस्थिति रही ।

चातुर्मासिक संपन्नता पर हुआ मंगल विहार

आमेट।

तेरापंथ भवन में विराजित में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सम्यकप्रभाजी,साध्वी सौम्याप्रभाजी, साध्वी मलयप्रभाजी, साध्वी दीक्षितप्रभा जी ठाणा-4 का चातुर्मासिक संपन्नता पर मंगल विहार अशोक गांधी के निवास स्थान जवाहर नगर पधारे। चातुर्मास में जप-तप,स्वाध्याय, त्याग-तपस्या, बारहव्रत कार्यशाला, निवि, आयम्बिल, प्रतिदिन व्याख्यान आदि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वी सम्यकप्रभाजी ने एक दिन पूर्व मंगल उद्बोधन में परदेशी राजा का प्रवचन व गीतिका के माध्यम से संपूर्ण श्रावक समाज के कार्य की सराहना करते हुए धर्म संघ में इसी तरह कार्य करते रहे व साधु संतों के रास्ते की सेवा उपासना करें। मंगल भावना कार्यक्रम में कन्या मंडल निवर्तमान संयोजिका अंजलि पितलिया ने विचार व्यक्त किये। श्रावक समाज ने नारे की जयकारों से अनुशासन रैली के साथ मंगल विहार गेलडा टेंन्ट गली, लक्ष्मी बाजार होते हुए जवाहर नगर अशोक गांधी के निवास स्थान पर पधारे।

साध्वीश्री ने मंगल पाठ फरमाया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, कन्या मंडल, ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चे व वयोवृद्ध श्रावक-श्राविकाओ आदि की उपस्थिति रही।

ॐ भिक्षु अखण्ड जप अनुष्ठान का आयोजन

साउथ दिल्ली।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर ABTMM द्वारा निर्देशित ॐ भिक्षु अखण्ड जप अनुष्ठान में साउथ दिल्ली महिला मंडल द्वारा 2 जगहों पर जप किया। "भारत व विश्व शांति के लिए एक ही तरंग ॐ भिक्षु जप अनुष्ठान – गुरु भक्ति और सद्भावना का विश्वव्यापी संदेश।" इस संदेश के साथ गोयल श्रद्धा भवन ग्रीन पार्क में "शासनश्री" साध्वी संघमित्रा जी के पावन सान्निध्य में व्यवस्थित जप का क्रम चला। मंत्री संगीता दुगड़ व अक्षा छाजेड़ ने सभी व्यवस्था को सुचारु रूप से संभाला। साध्वी संघमित्रा जी ने ABTMM के इस प्रयास की सराहना की और प्रत्येक तेरस को धम्म जागरण की प्रेरणा दी। 25 व्यक्तियों ने इस जप अनुष्ठान में भाग लिया। अध्यात्म साधना केंद्र महरौली में भी वात्सल्य पीठ पर साध्वी डॉ. कुंदनरेखाजी जी के पावन सान्निध्य में व्यवस्थित जप का क्रम चला। वहां भी 25 व्यक्तियों की सहभागिता रही। मंडल अध्यक्ष सरोज भूतोड़िया, बबीता बोहरा, रश्मि नौलखा ने सभी व्यवस्था को सफलता पूर्वक संचालित किया।

प्रतिभा सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

सुजानगढ़।

तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी श्री सुप्रभाजी ठाणा-5 के सान्निध्य में महिला मंडल द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती राजकुमारी भुतोड़िया ने अपने वक्तव्य द्वारा सभी बच्चों का हौसला बढ़ाया। साध्वी श्री मनीषाश्री जी ने फरमाया की बच्चे आने वाले भविष्य का निर्माण करने वाले है। बच्चों को मोबाइल से मुक्त रखा जाए और उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान की तरफ प्रेरित करें ताकि बच्चों के भविष्य का निर्माण हो सके। श्रीमती गरिमा पींचा एवं मोनिका पींचा ने बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। तत्पश्चात महिला मंडल की मंत्री डॉ पूजा फुलफगर ने आए हुए सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

महिला मंडल की बहन गरिमा पींचा और मोनिका पींचा ने बच्चों को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया। पर्युषण काल में हुई प्रतियोगिताओं के प्रतियोगियों को भी पुरस्कृत किया गया एवं ज्ञानशाला के बच्चे जिन्होंने संवत्सरी के उपवास एवं पौषध किए थे उन्हें भी पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का समापन मंगल पाठ से हुआ। संचालन कन्या मंडल की उपसंयोजिका वैशाली फुलफगर ने किया।

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **जयपुर।** अशोक छाजेड़ के नूतन आवास का गृह प्रवेश संस्कारक गौतम बरड़िया ने मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर जैन संस्कार विधि से सम्पन्न करवाया।

■ **मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया।** रतननगर निवासी डोंबिवली प्रवासी अनिल हीरावत के सुपुत्र ऋषभ व पुत्रवधु अश्विनी हीरावत का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया में जूम मीटिंग द्वारा संस्कारक राजकुमार हीरावत ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

विलक्षण व विशिष्ट प्रतिभा के धनी थे आचार्य भिक्षु

पूर्वांचल कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में मासिक शुक्ला त्रयोदशी पर भव्य भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल द्वारा भिक्षु विहार में किया गया।

मुख्य संगायक सुप्रसिद्ध गायक देवेन्द्र जी बैंगानी थे। धम्म जागरण में आशीर्वचन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा तेरापंथ के प्राणदेवता, संस्थापक आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु थे। वे विलक्षण व विशिष्ट प्रतिभा के धनी थे। वे आत्मार्थी ,पापभीरू, तत्त्वविद, मरुधर के मंदार, उज्ज्वल चरित्र के धनी थे। वे अनुशासन व साधना प्रिय थे। वे उनकी रचनाएँ तत्त्वबोध प्रेरणा व कुरूढ़ियों पर प्रहार करने वाली है। वे सत्य के प्रति समर्पित थे। उनके जितने गुण गाए उतना थोड़ा है। देवेन्द्र बैंगानी मधुर गायक है इन्होंने भिक्षु भक्ति गीतों के द्वारा सभी को भाव-विभोर कर दिया। सभी गायकों ने सुमधुर संगान किया है सभी के प्रति मंगलकामना व्यक्त करता हूँ। मुनिश्री कुछ भिक्षु भक्ति गीतों का आंशिक संगान भी किया। मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। धम्म जागरण में पूर्वांचल स्वर लहरी, जैन कला संगम, तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल, तेरापंथ किशोर मंडल पूर्वांचल, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा सॉल्टलेक, तेरापंथ महिला मंडल, साल्टलेक ने समूह गीतों व धीरज मालू, भूरामल सामसुखा, गुलाब बैद ने एकल गीतों का संगान व प्रस्तुति देकर सभा को भाव विभोर कर दिया। मुख्य संगायक देवेन्द्र बैंगनी ने एक के बाद एक, अनेक भिक्षु भक्ति गीतों की प्रस्तुति देकर सभा को मंत्र मुग्ध कर दिया। उन्होंने धम्मजागरण को नई ऊंचाई प्रदान की। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया ने किया। संचालन धीरज मालू ने किया।

मंगल भावना समारोह का आयोजन

जयपुर।

भिक्षु साधना केंद्र, सोडाला, श्यामनगर में पावस प्रवास कर रहे संतद्वय मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी के चातुर्मासिक प्रवास की परिसंपन्नता पर बुधवार को मंगलभावना समारोह का आयोजन रखा गया। जिसमें बड़ी संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने अपने-अपने अनुभव सुनाये। साथ ही मुनिश्री के मंगलमय संयम यात्रा के प्रति शुभकामना व्यक्त की। 'क्या खोया-क्या पाया' ? विषय पर अपने भाव प्रकट करते हुए श्रावक-श्राविकाओ में अपने विचार रखें - मुनिश्री के मुख मंडल से अर्हत वाणी का श्रवण कर हमने अपने अज्ञान को खोया और ज्ञान का अर्जन किया है।

इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने प्रेरक उपदेश में कहा - हमारे भीतर ज्ञान का दीप सतत प्रदीप्त रहे। क्योंकि अज्ञान ही संसार में सर्वोपरि दुःख का कारण है। मुनिश्री ने कहा - जिनवाणी का श्रद्धा से श्रवण, भक्ति भाव से आचरण और सेवा समर्पण आदि दुःख मुक्ति के और शाश्वत सुख-शांति पाने के आधारभूत कारण है। इस अवसर पर मुनिश्री संभवकुमार जी ने मुक्तक से तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी गोलछा, मंत्री सुरेंद्र सेखाणी, राजकुमार बरडिया, ओमप्रकाश जैन, राजेंद्र कुमार बांठिया (वरिष्ठ उपाध्यक्ष सभा), कमल सेठिया, प्रवीण बांठिया (अध्यक्ष, भिक्षु साधना केंद्र), पवन जैन (उपाध्यक्ष अणुव्रत समिति), तेरापंथ महिला मंडल (सी-स्कीम) अध्यक्षा कनक आंचलिया, मंत्री राजश्री बाफना, प्रेम मेहता, सुशीला नखत, सुरेंद्र सेठिया, सौरभ जैन (आंचलिक संयोजक ज्ञानशाला), तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष रवि छाजेड़, अभिषेक भंसाली, प्रज्ञा सुराणा, सुशीला पुगलिया, कुसुम घोड़ावत, श्रद्धा जैन, सीमा दूगड़, ज्ञानशाला की जिनिशा जैन, प्रणव घोड़ावत, मास्टर रतन जैन, शहर महिला मंडल मंत्री पायल जैन, बाबूलाल बैद, अमृतलाल बैद, शांता कोठारी, सुमेर चन्द बांठिया, हेमा नाहटा, तारा छाजेड़, टीपीएफ के दीपक जैन, सुशीला बोथरा, रणजीत हीरावत आदि ने अपने विचारों से मुनिश्री के प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

मौके पर ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं तथा तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने स्वतंत्र गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सैकड़ो लोगों ने सामूहिक रूप से मुनिश्री के उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की तथा खमतखामणा भी किये। इस अवसर पर सुरभि सेठिया सुपुत्री शांतिलाल सेठिया ने 11 की तपस्या का प्रत्याखान भी किया। परिवार की बहिनों ने सामूहिक गीत गाकर तप अनुमोदना की। मौके पर साहित्य भेंट कर तपस्वी बहिन का बहुमान किया गया।

संबोधि

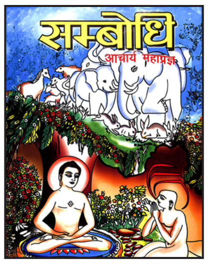

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मेघ ने जो कुछ कहा है, वह यही स्वर है। महावीर ने कह दिया मुझे भी मत पकड़ना। मेरे साथ भी स्नेह मत करना, अन्यथा यात्रा बीच में रह जाएगी। बस, पकड़ना है केवल अपने को। मेघ ने महावीर को बीच से हटा दिया। वह अकेला, अनवरत साधना-पथ पर बढ़ता रहा। साधना सिद्ध हुई और महावीर सामने खड़े हो गए। अब मेघ और महावीर के बीच द्वैत नहीं रहा। कृतज्ञता के स्वरों में मेघ की आत्मा नर्तन करने लगी। साधक सहजोबाई ने कहा है-भगवान् को छोड़ सकती हूं पर गुरु को नहीं। भगवान् ने कांटे ही कांटे बिछाए और गुरु ने सबको दूर हटा दिया। उसने बड़े मीठे, सरस और उपालंभभरे पद कहे हैं-

राम तजू पे गुरु न बिसारूं, गुरु को सम हरि को न निहारूं ।
हरि ने जनम दिया जग मांही, गुरु ने आवागमन छुड़ाहि।
हरि ने पांच चोर दिए साथा, गुरु ने लाई छुड़ाया अनाथा ।।
हरि ने कुटुम्ब जालन में गेरी, गुरु ने काटी ममता वेरी।
हरि ने रोग भोग उरझायो, गुरु जोगी कर सर्व छुड़ायो।
हरि ने मोसूं आप छिपायो, गुरु दीपक देताहि दिखायो।
फिर हरि बंधि मुक्ति गति लाये, गुरु ने सबही भर्म मिटाये ॥
चरण दास पर तन मन बारूं, गुरु न तजूं हरि को तज डारूं ॥

संबोधि ग्रंथ की फलश्रुति

४८. निर्ग्रन्थानामधिपतेः, प्रवचनमिदं महत्।
प्रतिबोधश्च मेघस्य, शृणुयाच्छ्रद्दधीत यः॥

४९. निर्मला जायते दृष्टिः, मार्गः स्याद् दृष्टिमागतः।
मोहश्च विलयं गच्छेत्, मुक्तिस्तस्य प्रजायते॥

(युग्मम्)

निग्रंथों के अधिपति भगवान् महावीर के इस महान् प्रवचन को और मेघकुमार के प्रतिबोध को जो सुनता है, श्रद्धा रखता है, उसकी दृष्टि निर्मल होती है, उसे सम्यग्-पथ की प्राप्ति होती है, मोह के बंधन टूट जाते हैं और वह मुक्त बन जाता है।

मेघ के माध्यम से 'संबोधि' का जन्म हुआ। मेघ ने महावीर से सुना, समझा और श्रद्धा-पूर्वक उसका अनुशीलन किया।

मेघ मुक्त हो गया। और भी जो इसे सुनेंगे, समझेंगे और आचरण करेंगे वे भी मुक्त होंगे। हम सबके अंतस्तल में सच्ची प्यास प्रकट हो और हम महावीर के पवित्र चरणों में अपने आपको सहज भाव से समर्पित कर उस परम सत्य का रसास्वादन करें।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे मनःप्रसादनामा षोडशोऽध्यायः । (क्रमशः)

श्रमण महावीर

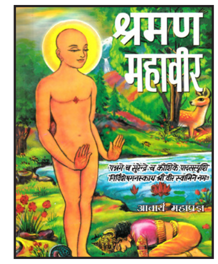

क्रान्ति का सिंहनाद

'जिसमें इन्द्रिय और मन का संयम, अहिंसा का आचरण और देह का विसर्जन होता है वह श्रेष्ठ यज्ञ है।'

'क्या आप भी यज्ञ करते हैं?'

'प्रतिदिन करता हूं।'

मुनि की बात सुन रुद्रदेव विस्मय में पड़ गया। उसे इसकी कल्पना नहीं थी। उसने आश्चर्य के साथ पूछा- 'मुने ! तुम्हारी ज्योति कौन-सी है? ज्योतिस्थान कौन-सा है? घी डालने की करछिया कौन-सी हैं? अग्नि को चलाने के कंड़े कौन-से हैं? ईंधन और शान्ति-पाठ कौन-से हैं और किस होम से तुम ज्योति को हुत करते हो?'

इसके उत्तर में मुनि हरिकेश ने अहिंसक यज्ञ की व्याख्या की। वह व्याख्या महावीर से उन्हें प्राप्त थी।

मुनि ने कहा-'रुद्रदेव! मेरे यज्ञ में तप ज्योति है, चैतन्य ज्योति-स्थान है। मन, वाणी और काया की सत्यवृत्ति घी डालने की करछिया हैं। शरीर अग्नि जलाने के कंड़े हैं। कर्म ईन्धन है। संयम शान्तिपाठ है। इस प्रकार मैं अहिंसक यज्ञ करता हूं।'

इस संवाद में यज्ञ का प्रतिवाद नहीं किन्तु रूपान्तरण है। इस रूपान्तरण से पशु-बलि का आधार हिल गया। महावीर के शिष्य बड़े मार्मिक ढंग से उसका प्रतिवाद करने में लग गए।

एक बकरा बलि के लिए ले जाया जा रहा था। मुनि ने उसे देखा। वे उसके सामने जाकर खड़े हो गए। बकरा जैसे ही निकट आया, वैसे ही मुनि नीचे झुके और अपने कान बकरे के मुंह के पास कर दिए। देखते-देखते लोग एकत्र हो गए। कुछ देर बाद मुनि अपनी मूल मुद्रा में खड़े हुए। लोगों ने पूछा-'महाराज ! आप क्या कर रहे थे?'

मुनि बोले- 'बकरे से कुछ बातें कर रहा था।' 'हम आपका वार्तालाप सुनना चाहते हैं-लोगों ने कहा।'

मुनि बोले- 'मैंने बकरे से पूछा-मौत के मुंह में जाने से पहले तुम कुछ कहना चाहते हो?' उसने कहा- 'यदि मेरी बात जनता के कानों तक पहुंचे तो मैं अवश्य कहना चाहूंगा।' मैंने उसकी भावना को पूरा करने का आश्वासन दिया। तब उसने कहा-'मेरी बलि इसलिए हो रही है कि मैं स्वर्ग चला जाऊं। तुम इस 'होता' से कहो कि मुझे स्वर्ग में जाने की आकांक्षा नहीं है। मैं घास-फूस खाकर इस धरती पर संतुष्ट हूं, फिर यह मुझे क्यों असंतोष की ओर ढकेलना चाहता है? यदि यह मुझे स्वर्ग में भेजना चाहता है तो अपने प्रियजनों को क्यों नहीं भेजता? उनकी बलि क्यों नहीं चढ़ाता?' यह कहकर बकरा मौन हो गया। उपस्थित जनों! उसका आत्म-निवेदन मैंने आप लोगों तक पहुंचा दिया।

मुनि स्वयं मौन हो गए। उनका स्वर महावीर की दिशा से आने वाले हजारों-हजारों स्वरों के साथ मिलकर इतना मुखर हो गया कि युग-युग तक उसकी गूंज कानों से टकराती रही। बलि की वेदी अहिंसा की छत्रछाया में अपने अस्तित्व की लिपि पढ़ने लगी।

9. युद्ध और अनाक्रमण

यह आकाश एक और अखण्ड है, फिर भी अनादिकाल से मनुष्य घर बनाता आ रहा है और उसकी अखण्डता को खंडित कर सुविधा का अनुभव करता चला आ रहा है। इस विखंडन का प्रयोजन सुविधा है। अखण्ड आकाश में मनुष्य उस सुविधा का अनुभव नहीं करता जिसका विखंडित आकाश में करता है। मनुष्य जाति की एकता में मनुष्य को अहंतृप्ति का वह अनुभव नहीं होता जो उसकी अनेकता में होता है। अहंवादी मनुष्य अपने अहं की तृप्ति के लिए मनुष्य जगत् को अनेक टुकड़ों में बांटता रहा है।

इस विभाजन का एक रूप राष्ट्र है। एक संविधान और एक शासन के अधीन रहने वाला भूखण्ड एक राष्ट्र बन जाता है। दूसरे राष्ट्र से उसकी सीमा अलग हो जाती है। वह सीमा-रेखा भूखण्ड को विभक्त करने के साथ मनुष्य-जाति को भी विभक्त कर देती है। वह विभाजन विरोधी हितों की कल्पना को उभार कर युद्ध को जन्म देता है, मनुष्य को मनुष्य से लड़ने के लिए प्रेरित करता है।

भगवान् महावीर ने युद्ध का इस आधार पर विरोध किया कि मानवीय हित परस्पर विरोधी नहीं हैं। उनमें सामंजस्य है और पूर्ण सामंजस्य। अहं और आकांक्षा ने विरोधी हितों की सृष्टि की है। पर वह वास्तविक नहीं है। उस समय की राजनीति में युद्ध को बहुत प्रोत्साहन मिल रहा था। उसकी प्रशस्तियां गाई जाती थीं। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री हरखूजी (सुजानगढ़) दीक्षा क्रमांक 194

साध्वीश्री तपस्विनी साध्वी थी। साध्वी श्री प्रकृति भद्रता, शान्त कषाय तथा समता भाव को अपने में समाहित किये थे। इन गुणों से सुशोभित साध्वीश्री ने उपवास से आठ दिन तक का तप किया।

– साभार : शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समाज-सुधार के सूत्रधार : गुरुदेव श्री तुलसी

आचार्यवर ने टिप्पणी करते हुए संतों से कहा- ऐसा उपालम्भ हर कोई सहन नहीं कर सकता है।

प्रवचन का प्रभाव

टाडगढ़ से विहार कर आचार्यवर बरार की ओर आगे बढ़ रहे थे। सड़क पर एक भाई ने आकर वन्दना की। आचार्यवर के पैर थमे। भाई ने अपना परिचय देते हुए कहा-आचार्यजी! आप इकतीस वर्ष पहले यहां पधारे थे। तब मैं छठी कक्षा में पढ़ता था। मैंने आपका प्रवचन सुना और इतना प्रभावित हुआ कि मेरे जीवन की दिशा ही बदल गई। तब से अब तक मैंने शराब, मांस को छुआ तक नहीं। धूम्रपान भी कभी नहीं किया। मैं ही नहीं, मेरा परिवार भी व्यसन-मुक्त है। मेरे हृदय पर आपके व्यक्तित्व की अमिट छाप है। मैंने आज आपके लिए पूरी तैयारी की है। आपको मेरी कुटिया में पधारना होगा। आचार्यश्री उसके घर पर पधारे। उसने दूध लेने के लिए आग्रह किया। आचार्यवर ने इन्कार करते हुए कहा- रास्ते में हम दूध नहीं लेते, फिर यह दूध हमारे लिए तैयार किया हुआ है। अतः हमारे लिए अग्राह्य है। तुमने अपने जीवन को बदला, परिवार को सुसंस्कारित बनाया, यह सबके लिए अनुकरणीय है। तुम्हारी भक्तिपूर्ण भावना स्तुत्य है।

शिकारियों को आध्यात्मिक शिकार

परमाराध्य आचार्य प्रवर टाडगढ़ में विराज रहे थे। होली पर्व का अवसर था। रावल जाति के लोग आपस में मिले और कुछ देर बाद वे आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ सभाभवन में उपस्थित हुए। दर्शन करने के बाद उन्होंने आचार्यप्रवर से उपदेश देने के लिए प्रार्थना की। आचार्यश्री ने दस-पन्द्रह मिनट तक उद्बोधन दिया। उपदेश से प्रभावित होकर उन लोगों में से किसी ने शराब, किसी ने अफीम और किसी ने सिगरेट पीने का प्रत्याख्यान कर दिया।

उन लोगों में से एक ने 'हेडा' में जाने का त्याग करना चाहा। आचार्यवर ने पूछा-यह हैडा क्या होती है? लोगों ने बताया कि हैडा शिकार को कहते हैं। आचार्यवर ने शब्द के मूल को पकड़ते हुए फरमाया-आखेटक-आहेडक-आहेडा और उसी का 'हेडा' बना है।

आचार्यवर (लोगों से) होली पर शिकार करते हो?

लोग-परंपरा तो है।

आचार्यवर-शिकार हिंसा है, क्रूरता का प्रतीक है, ऐसी तुच्छ परंपरा को तोड़ सको तो तोड़ दो।

उपस्थित सभी लोगों ने खड़े होकर हैडा (शिकार) करने का जीवन भर के लिए त्याग कर दिया।

सच्ची भेंट

२३ मार्च १९८५ को परमाराध्य आचार्य प्रवर ज्ञानगढ़ से विहार कर चिताम्बा पधार रहे थे। लोगों के निवेदन पर आचार्यवर ने पगडण्डी का रास्ता ले लिया। ऊबड़-खाबड़ पथरीली व कंटीली पगडण्डी पर आचार्यवर अपने गन्तव्य की ओर अग्रसर हो रहे थे। छोटे से ग्राम झीणा के ठाकुर विजय सिंहजी द्रुतगति से चलकर आचार्यवर के समीप आए। वे गुरुदेव के उपहारार्थ अपने साथ दूध, शक्कर, गुड़ लाए थे। गुरुदेव ने पैर थमाए और उनको अपनी भिक्षा-विधि बतलाते हुए कहा- ये सब चीजें तो नहीं, कुछ और दो।

ठाकुर साहब-क्या दूं? मांस खाता नहीं। मदिरा पीता नहीं।

आचार्यश्री-बीड़ी पीते होंगे?

ठाकुर साहब-पीता हूं।

आचार्यश्री-क्या उसे छोड़ सकते हैं?

सहयात्री जन-बहुत मुश्किल है।

ठाकुर साहब मुश्किल क्या है? आपका हुक्म होगा तो छोड़ दूंगा।

आचार्यश्री-छोड़ दो।

ठाकुर साहब यह छोड़ी। उन्होंने बीड़ी पीने का त्याग कर दिया।

साथ में चलने वाले यात्री देखते ही रह गए। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें

https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyptt@gmail.com पर ई-मेल

अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

नवम्बर 2025
सप्ताह के विशेष दिन

26 नवंबर	30 नवंबर
भगवान सुविधिनाथ दीक्षा कल्याणक	भगवान अरनाथ जन्म एवं निर्वाण कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री रावतमलजी (सुजानगढ़) दीक्षा क्रमांक 426

मुनिश्री की तपश्चर्यामें अच्छी अभिरूचि थी। उनके तप की सूची इस प्रकार है– उपवास/1750, 2/122, 3/21, 4/8, 5/11, 6/1, 8/1 कुलदिन 2158 जिनके 5 वर्ष 11 महीने 3 दिन होते है। – साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज़ पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप्प अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

इंसान जैन बने या न बने, लेकिन गुड मैन जरूर बने

बायतु।

स्थानीय तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के अणुव्रत अनुशास्ता नवम आचार्य तुलसी के 112वें जन्मदिवस को अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि जीवन में सदैव आत्मनिरीक्षण की प्रवृति होनी चाहिए चिंतन करके सक्रिय होकर स्वयं को जानने वाले व्यक्ति के जीवन में आनंद ,शांति,संयम का समावेश होता है आचार्य तुलसी ने अपने जीवन सफर में कांटो प्र भी नैतिक सुरभि का संचार किया आचार्य तुलसी जीवन की चिकित्सा करने वाले महापुरुष थे नशाखोरी ,रिश्वतखोरी ,भ्रष्टाचार जैसी बीमारियों के उन्मूलन के लिए प्राणी मात्र को नैतिकता ,सद्भावना जैसी दवा प्रदान की उन्होंने अपने क्रांतिकारी चिंतन से मानव जगत को नवीन राह प्रदान की सभी साधु साध्वियों, श्रावक समाज में निहित क्षमताओं को पहचान कर उनका विकास करने वाले दूरदृष्टि के धनी इतिहास पुरुष बने वर्तमान में अणुव्रत के भाष्यकार आचार्य महाश्रमण गांव-गांव जाकर हर जाति वर्ग का अणुव्रत के माध्यम से जीवन संचार का कार्य कर रहे है उन्होंने कहा कि व्यक्ति जैन बने या न बने लेकिन गुड मैन जरूर बने अणुव्रत ही इसका श्रेष्ठ माध्यम है। साध्वी मधुरयशा जी ने कहा कि जीवन के महासागर में गीत उसी के गाए जाते जिन्होंने स्वयं को संघर्षों में झोंक कर मानवता के लिए कार्य किया हो । साध्वी धवलप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने अपने जीवन में चरैवेति चरैवेति मूल मंत्र को अपनाकर निरंतर प्रवर्धमान रहे। साध्वी मार्दवयशा जी ने कहा कि उनके जीवन में नवीनता थी नेतृत्व क्षमता बेजोड़ थी अन्वेषणकर्ता जैसी योग्यता के कारण जन-जन में लोकप्रिय हुए साध्वी वृंद ने आचार्य तुलसी को समर्पित सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी। राधा चौपड़ा,नेमीचंद बालड़ ,मनोज चौपड़ा ने गीत, कविता ,भाषण के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त कर आचार्य तुलसी के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किए कार्यक्रम में संरक्षक नेमीचंद छाजेड़, सभा अध्यक्ष राकेश जैन, कोषाध्यक्ष मदन बालड़, अशोक मण्डोतर, मोहनलाल गोलेच्छा, गौतम मालू, महिला मंडल अध्यक्षा अनीता जैन, मंत्री कंचन मालू, कन्यामंडल प्रभारी कंचन डी मालू सहित श्रावक समाज उपस्थित रहा। आचार्य तुलसी के जीवनवृत को प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी श्वेतप्रभा जी ने किया।

आडंबर है वास्तविक शांति में सबसे बड़ा बाधक

आमेट।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी प्रज्ञाश्री जी एवं सहवर्ती साध्वी प्रतीकप्रभा जी द्वारा प्रेरणा प्रदान करते हुए तेरापंथ सभा भवन में फरमाया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का आगाज हुआ। पवन कच्छारा ने 'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है तुमने मंत्र पढ़ाया' से संपूर्ण श्रावक समाज की ओर से स्वागत अभिनंदन किया। साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने अपने प्रेरणादाई प्रवचन में सम्यक दर्शन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि-सम्यक दर्शन जीवन की दिशा को मोड देता है जब मन में सत्य अहिंसा करुणा और आत्मचिंतन का दीप जलता है तभी सम्यक दृष्टि का उदय होता है। उन्होंने बताया कि आडंबर मनुष्य की वास्तविक शांति में सबसे बड़ा बाधक है। आडंबर और दिखावे से व्यक्ति अपने आत्मस्वरूप से दूर होता जाता है। साध्वीश्री ने श्रावक-श्राविकाओं को सरल जीवन, उच्च विचार और आत्मसाधना का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने सुमधुर गीतिका द्वारा श्रावक समाज को संयमित जीवन जीने का संदेश दिया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष यशवंत कुमार जी चोरडिया ने साध्वीश्री के प्रति अनंत अनंत कृतज्ञा ज्ञापित की व उपस्थित परिषद के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में उपस्थित जनों ने साध्वीश्री जी के चरणों में विनय, श्रद्धा अर्पित की ओर आध्यात्मिक शांति का अनुभव किया। कार्यक्रम का समापन साध्वीश्री के मंगल पाठ के श्रवण से हुआ।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

आमेट।

युगप्रधान आचार्य महाश्रमण की सुशिष्या साध्वी प्रज्ञाश्री ठाणा-4 बोरज चातुर्मास संपन्नता कर मंगल विहार करते हुए। मार्बल एसोसिएशन आईडाणा से आमेट 10 किलोमीटर का विहार कर आमेट पधारे। श्रावक समाज ने रास्ते की सेवा उपासना का लाभ लिया। साध्वी सम्यकप्रभा, साध्वी सौम्याप्रभा साध्वी मलयप्रभा साध्वी दीक्षितप्रभा ठाणा-4 एवं साध्वी प्रज्ञाश्री, साध्वी सरलप्रभा, साध्वी विनयप्रभा, साध्वी प्रतीकप्रभा ठाणा-4 का आध्यात्मिक मिलन हुआ। विवेकानंद कॉलोनी पूनम चंद हिरण के निवास स्थान पर साध्वीश्री का मंगल भावना कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ जेटीएन प्रतिनिधि पवन कच्छारा द्वारा अंबापुर नगरी के भाग आज खुल गये है सतीवर आये हैं। साध्वी सम्यकप्रभा एवं साध्वी प्रज्ञाश्री ने प्रेरणा प्रदान करते फरमाया कि आध्यात्मिकता का अर्थ है स्वयं को जानना और दूसरों में शुभ भाव देखना उन्होने जीवन में संयम सादगी और आत्मानुशासन अपनाने का संदेश दिया। साध्वियों ने सामूहिक गीतिका से स्वागत अभिनंदन किया। मंगल भावना कार्यक्रम में तेरापंथ सभा निवर्तमान अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, संरक्षक महेंद्र बोहरा, उपाध्यक्ष हस्ती मल पामेचा, उपासक शांतिलाल छाजेड़,धर्मचंद खाब्या एवं प्राची कोठारी, महिला मंडल निवर्तमान अध्यक्षा संगीता पामेचा व महिला मंडल सामूहिक गीतिका व संभाषण द्वारा स्वागत अभिनंदन किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन व स्वागत अभिनंदन सभा उपाध्यक्ष ज्ञानेश्वर मेहता ने किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

गणी सोहई भिक्खुमज्झे' शरद पूर्णिमा महाशक्ति जप अनुष्ठान

पल्लावरम।

राजराजेश्वरी नगर। साध्वी पुण्ययशाजी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य शरद पूर्णिमा को सांय तेरापंथ भवन में गणी सोहई भिक्खुमज्झे महाशक्ति अनुष्ठान किया गया। जिसमें विभिन्न मुद्राओं, बीजाक्षरों, स्वर विज्ञान एवं रंगों के साथ विभिन्न मंत्रों का लयबद्ध उच्चारण किया गया। साध्वी पुण्ययशा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा– मंत्र में असीमित शक्ति होती है। बीजाक्षर मंत्र लघुकाय होते हुए भी अध्यात्म शक्ति के अक्षय स्त्रोत होते हैं। यही कारण है कि किसी मंत्र के साथ बीजाक्षर जोड़ने से उसमें अद्भुत शक्ति पैदा हो जाती है। ध्वनि और मुद्रा पूर्वक किया गया।

आह्वान दिव्य शक्तियों के साथ संपर्क स्थापित करने का माध्यम बनता है। एकाग्रता मंत्र साधना का प्राण है। मंत्र के साथ मुद्रा, श्वास, चैतन्य केन्द्र और रंग की समायोजना होने से जीवन की समस्याओं, बीमारियों, मानसिक तनाव आदि को दूर किया जा सकता है। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। सभी समागतों को श्री व नवकार मंत्र अंकित रजतपत्र दिया गया। सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने समागत का स्वागत करते हुए जितेन्द्र व विक्रम के सक्रिय सहयोग की अनुमोदना एवं उन्हें सम्मानित किया।

कन्यामंडल से दिया छाजेड़, झलक रूणवाल, प्रज्ञा मरोठी, छवि नोलखा व प्रेक्षा मरोठी की समवसरण के प्रतिरूप के निर्माण में समय व श्रम नियोजन हेतु सराहना की। मंत्री गुलाब बाँठिया, सुशील भंसाली (छापर), सुशील भंसाली, प्रकाश बोहरा एवं तेयुप व महिला मंडल की टीम ने सुंदर व्यवस्था में सक्रिय सहयोग दिया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

अजमान (यूएई)।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या डॉ. समणी मज्जुप्रज्ञा और समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के निर्देशन में तथा अजमान सभा के तत्वाधान में एक दिवसीय प्रेक्षा हेल्थ कैम्प/ शिविर का आयोजन किया गया था। जिसमें दुबई, अजमान, शारजाह तथा आबुधाबी क्षेत्र से 103 संभागियों ने भाग लिया। शिविर का प्रारम्भ अजमान सभा के सदस्यों ने प्रेक्षा ध्यान गीतिका से किया। समणी मज्जुप्रज्ञाजी ने शिविर में प्रेक्षाध्यान में सावधानियाँ, व उसकी पाँच उपसम्पदाओं की व्याख्या की। ध्यान के प्रायोगिक सत्र में संभागियों ने गहनता के साथ प्रयोग किया। लेश्या ध्यान के अन्तर्गत समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने आभामण्डल व रंगों के बारे में विस्तार से बताया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका विजया बेंगानी ने श्राविकाओं को तथा प्रेक्षा प्रशिक्षक, संस्कारक तपस्वी उपासक दिनेश कोठारी ने श्रावकों को सुन्दर कायोत्सर्ग का अभ्यास करवाया। डॉ. राजेश सिसोदिया ने एक्सरसाईज सत्र में लाफिंग योग के साथ विस्तार से फैटी लिवर से बचने के उपायों को बताया। इस शिविर में बच्चों के सत्र में यू ट्यून स्टार 10 और 13 वर्षीय जीविका और जैनम ने विभिन्न कार्यक्रमों का संपादन किया। शिविर के आयोजन के लिए धीरज जैन ने जैनम-जीविका फॉर्म हाउस प्रदान कर सुविधाएं सुलभ करवायीं। शिविर को व्यवस्थित रूप देने में उपासक श्री दिनेश कोठारी के साथ अजमान सभा से अध्यक्ष अभिनन्दन सेठिया, उपाध्यक्ष निशान्त तातेड़, मंत्री राकेश पटावरी, पुष्पा कोठारी, दीप्ति पटावरी का श्रम सराहनीय है। अन्जय मुणोत ने बच्चों को जैन जीवन शैली के बारे में बताया। इस शिविर में हव्या तातेड़ आदर्श शिविरार्थी रही। सुमित बोथरा और कपिल मेहता का तपाभिनन्दन अजमान सभा द्वारा किया गया। उनके तप की बहुत-बहुत अनुमोदना। आज समणी जी के सान्निध्य में नवनीता पटावरी, धर्मपत्नी राकेश पटावरी के 13 दिनों की तपस्या के उपलक्ष में तपानुमोदन का कार्यक्रम रखा गया। इस सन्दर्भ में दोनों समणी जी ने तप की व्याख्या के अतिरिक्त तपस्वी बहिन के तप की अनुमोदना गीतिका व भाषण से की। अजमान सभा अध्यक्ष अभिनन्दन सेठिया एवं मंत्री राकेश पटावरी ने गीतिका के माध्यम से तपस्वी को बधाई दी। उपासक श्री दिनेश कोठारी, निशान्त तातेड़, राकेश पटावरी, अभिनन्दन सेठिया ने साहित्य प्रदान कर तपस्वी बहिन की तपानुमोदना की। शोभा बैद, नीलू मेहता दिव्या मेहता तथा प्रदीप मेहता, देवेंद्र मेहता, सुमित बोथरा ने सामायिक आदि आध्यात्मिक प्रयोगों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। तपस्वी बहिन की तपानुमोदना की। शोभा बैद, नीलू मेहता तथा प्रदीप मेहता ने सामायिक आदि आध्यात्मिक प्रयोगों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम को सफलतम बनाने में श्री दिनेश कोठारी एवं पुष्पा जी कोठारी का भरपूर सहयोग रहा।

'प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष' समापन समारोह का आयोजन

नागपुर।

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के समापन समारोह का आयोजन प्रेक्षाध्यान दिवस पर प्रेक्षा वाहिनी नागपुर द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। वाहिनी संवाहक प्रेमलता सेठिया ने त्रिपदी वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए प्रेक्षा गीत का सामूहिक संगान करवाया। तेरापंथ सभा से सुनील छाजेड़ ने प्रस्तावना वक्तव्य देते हुए सभी को प्रेक्षा ध्यान का दैनिक जीवन में प्रयोग करने की बात कही। अमित जैन ने दीर्घ श्वास प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग करवाया और इसका महत्व भी बताया। सिरियारी तथा लाडनूं में होने वाले शिविरों की जानकारी दी। जतन मालू ने प्रतिदिन सुबह आसान, प्राणायाम और प्रेक्षा ध्यान की क्लास के बारे में अवगत करवाया तथा सभी से इसे ज्वाइन करने के लिए निवेदन किया।

पृष्ठ 1 का शेष

धर्माचरण बनेगा आत्मा...

छह खंड के आधिपति चक्रवर्ती का भी एक समय अवसान हो जाता है। तीर्थंकर भगवान की भी आत्मा कभी शरीर से मुक्त होकर मोक्ष में चली जाती है। इसलिए कहा गया है कि शरीर अध्रुव है, यह वैभव, धन-संपत्ति भी अशाश्वत है, और मृत्यु निकट से निकटतर आती जा रही है। ऐसी स्थिति में जितना धर्म इस मानव जीवन में कर सके, वह हमारी आत्मा के लिए बहुत बड़ी पूंजी हो जाता है। जीवन क्षणमंगुर है, पता नहीं कब आयुष्य पूर्ण हो जाए। इसलिए धर्म करना चाहिए। जैन धर्म में सामायिक, पौषध, उपवास आदि हैं, और अहिंसा, नैतिकता, नशामुक्ति, सद्भावना आदि चीजें जीवन में रहें तो जीवन युक्तियुक्त बन सकता है, आत्मा निर्मल बन सकती है। और संन्यास का जीवन मिल जाए तो वह बहुत बड़ी बात है — रहें भीतर, जियें बाहर। आज प्रांतीज आना हुआ है। राजस्थान से गुजरात जाते समय भी यहां आना हुआ था और वापसी में भी आज प्रांतीज आना हुआ है। यहां ज्ञानशाला और सभी धार्मिक गतिविधियां अच्छी तरह चलती रहें। यहां के सभी वर्गों के लोगों में सद्भावना, नशामुक्ति, नैतिकता और धार्मिकता के संस्कार रहें। साधुत्व सबके जीवन में न भी आए, पर जीवन में अच्छे संस्कार रहें। जीवन में सादगी रहे और विचारों में उच्चता रहे — यही मानव जीवन का श्रृंगार है। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएं ज्ञानशाला के माध्यम से बालकों में ज्ञान और सद्संस्कारों का विकास बिना किसी पारिश्रमिक के कर रही हैं। ज्ञानदान के रूप में यह सेवा का बहुत बड़ा कार्य है। परमपूज्य गुरुदेव के मंगल प्रवचन के उपरांत साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि आचार्यप्रवर लगभग एक वर्ष से गुजरात की धरती पर परिव्रजन कर नैतिकता, ईमानदारी और सद्भावना का संचार लोगों में कर रहे हैं। परमपूज्य गुरुदेव उपासनात्मक धर्म के पक्षधर हैं और इसके साथ-साथ आचरणात्मक धर्म पर भी बल देते हैं, और जिस व्यक्ति का आचरण अच्छा होता है वह व्यक्ति अपने जीवन में उपलब्धियां भी प्राप्त कर सकता है। साध्वीप्रमुखाश्री जी के उद्बोधन के पश्चात बालक सम्यक ने अपनी बालसुलभ प्रस्तुति दी। दीपसिंह राठौड़ ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

प्रांतीज ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। आचार्यप्रवर ने ज्ञानार्थियों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। गुजरात स्तरीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया। विद्या विहार के ट्रस्टी रहिशभाई ने भी आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। स्थानीय विधायक गजेन्द्र सिंह ने भी आचार्यश्री के स्वागत में भावनाओं की अभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

बोलती किताब

धर्म : एक समाधान

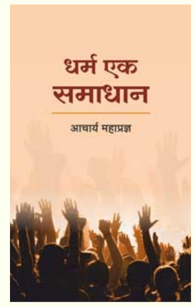

जीवन का सबसे बड़ा सूत्र, जिसके प्रति हमारी जागरूकता बढ़े, वह है स्वास्थ्य। स्थानांगसूत्र में भगवान महावीर ने दस प्रकार के सुख बतलाए हैं।उनमें पहला सुख है आरोग्य। प्रचलित कहावत भी है-'पहला सुख निरोगी काया'। शरीर का निरोग होना पहला सुख है। यदि स्वास्थ्य अच्छा है, शरीर निरोग है तो सारे सुख आ जाते हैं। यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो सुख के सारे साधनों के बावजूद व्यक्ति दु:ख ही भोगेगा।

प्राणी के लिए आवश्यक और अवश्यंभावी बात हो सकती है। मनोरंजन जरूरी हो सकता है आदमी के लिए,किंतु इसकी कोई सीमा तो होनी चाहिए। दिन भर वीडियो ओर सिनेमा ही देखेंगे तो अन्य कार्य, जो ज्यादा आवश्यक हैं, कब करेंगे? यह इन्द्रिय का प्रबल असंयम व्यक्ति और समाज दोनों के स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक है। इन्द्रियों की उच्छृंखलता को समाप्त किए बिना स्वास्थ्य की कल्पना नहीं की जा सकती।स्वास्थ्य के लिए आहार विवेक पर चिंतन जरूरी है। ज्यादा चीनी खाना, ज्यादा नमक खाना, ज्यादा चटपटी चीजें खाना और ज्यादा द्रव्य खाना, बहुत सारी चीजें एक साथ खाना-ये सब बीमारी के लिए जिम्मेदार हैं।

शांति का प्रश्न शरीर से जुड़ा हुआ नहीं है। मन से कुछ जुड़ा हुआ है, किंतु मन से भी पूरा जुड़ा हुआ नहीं है। वह जुड़ा हुआ है भावना से। जब तक भावनात्मक संतुलन नहीं होता, शांति की बात नहीं सोची जा सकती। कोई भी आदमी तब तक शांति का जीवन नहीं जी सकता, जब तक वह भावना का संतुलन न साधे। भावनात्मक दृष्टि से आदमी बहुत असंतुलित रहता है। उसी डॉक्टर ने बताया कि मैं बहुत चिड़चिड़ा हो गया हूं। बात-बात में गुस्सा आता है। कुछ अजीब -सा स्वभाव बन गया है।

शांतिपूर्ण जीवन जीने की बात एक वर्ष में सिखाई जा सकती है। उसका केवल पाठ नहीं, प्रयोग ओर अभ्यास कराया जा सकता है। उस प्रशिक्षण के द्वारा मनुष्य ऐसा मस्तिष्क लेकर निकलेगा, जो अच्छा जीवन जीने में सहायक बनेगा। यह बात सबके समझ में आएगी या नहीं, आएगी तो कब आएगी,कहा नहीं जा सकता, क्योंकि ग्रहणशीलता में भी बहुत अंतर होता है। जो भुक्तभोगी हैं, आज की शिक्षा की यातना भोग रहे हैं, उनके सामने यह बातरखी जाए तो वे बहुत जल्दी पकड़ लेंगे। हिन्दुस्तान के समाज ने अभी उतनी यातना नहीं भोगी है, जितना पश्चिम का समाज भोग चुका है। उच्छृंखलता यहां अभी उतनी नहीं है, जितनी पश्चिम में है। किसी बात को जल्दी पकड़लेना जरा मुश्किल काम है। इसमें बाधाएं भी बहुत आती हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

गुरु दर्शन यात्रा सानंद सम्पन्न

विक्रोली, मुंबई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा विक्रोली के तत्वावधान में गुरु दर्शन यात्रा का आयोजन श्रद्धापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। लगभग 75 साधार्मिक बंधुओं ने इस यात्रा में सहभागिता की और परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के चरणों में वंदन कर आत्मिक आनन्द का अनुभव किया। यात्रा का प्रायोजन रवि भंडारी ने किया। यात्रा के अंतर्गत अनुशासन रैली का भी आयोजन हुआ। पंडाल में प्रवेश पर आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा मंगल उद्बोधन व मंगलपाठ हुआ। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री जी, साध्वी वर्याश्री जी सहित साधु-साध्वियों के दर्शन एवं आशीर्वाद का लाभ प्राप्त किया। यात्रा की संपूर्ण सफलता के पीछे श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा विक्रोली के अध्यक्ष जयंतीलाल बोरडिया और मंत्री भरत एस. कोठारी का समर्पण रहा।

तेरापंथ युवक परिषद् विक्रोली के अध्यक्ष मनीष बोहरा और मंत्री विपिन पोखरना सहित उनकी पूरी टीम ने सभी व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित और सफलतापूर्वक संपन्न कराया। तेरापंथ महिला मंडल विक्रोली की अध्यक्ष पिंकी बाफना और मंत्री कविता राठौड़, जैन विद्या केन्द्र व्यवस्थापक स्नेहलता पोखरना, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षक मंजू ओस्तवाल ने भी इस यात्रा में सहयोग और समर्थन प्रदान किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 नवम्बर - 23 नवम्बर, 2025

जीवन में धर्म है तो मंगल स्वतः है भीतर : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
04 नवम्बर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म की अति संक्षेप और अति सुन्दर व्याख्या है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। प्राणियों को मंगल अभीष्ट होता है। प्रवेश और प्रस्थान दोनों सफल हो इसके लिए अनेक लोग मुहूर्त देखते हैं। मंगल पाठ की भी परम्परा है। विदाई के समय मंगल भावना समारोह भी आयोजित होता है और उसमें कितने लोग अपने ढंग से अभिव्यक्ति देते हैं।

यदि हमारे जीवन में धर्म है तो मंगल हमारे भीतर है, हमारे साथ है। चातुर्मास में साधु-साध्वियां चार महीने अथवा जो भी कालावधि है उसके लिए सामान्यतया विधि विधान के अनुरूप बद्ध हो जाते हैं। एक निर्धारित क्षेत्र में प्रवास करते हैं। चातुर्मास के समय धर्माराधना योजना के अनुसार काफी व्यवस्थित हो सकती है। चातुर्मास में चारित्र आत्माएं और गृहस्थ लोग दोनों तप आराधना करते हैं। धर्म के तीन आयाम हो जाते हैं - अहिंसा, संयम और तप। ये तीनों धर्म हैं और तीनों मंगल हैं। चातुर्मास में प्रवचन आदि होते हैं, यह भी एक प्रकार का तप है। अपने श्रम की परवाह किए बिना उपदेश देना चाहिए, व्याख्यान देना चाहिए क्योंकि प्रवचन करने वाला स्वयं पर भी अनुग्रह करता है और दूसरों पर भी अनुग्रह करता है। प्रवचन के द्वारा किसी को प्रेरणा देने से व्यक्ति के भीतर संवेग आ सकता है, एक सफलता की उपलब्धि हो सकती है।

नवदीक्षित साधु-साध्वियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा कि चलते समय ईर्या समिति का पूर्ण ध्यान रखें और ट्रेफिक के प्रति हमारी पूर्ण जागरूकता रहे। सभी साधु-साध्वियां इस विषय में जागरूकता रखें। साधु जीवन में अच्छा प्रतिक्रमण होना चाहिए, प्रतिक्रमण को छोड़ना नहीं चाहिए। इसी प्रकार प्रतिलेखन का कार्य भी समय पर सजगता के साथ हो जाए। भाषा समिति में भी जागरूकता रहे। पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अच्छी आराधना हमारे लिए कल्याणकारिणी हो सकती है। इस प्रकार अहिंसा, संयम और तप धर्म है और साधु धर्म मूर्ति होना चाहिए। साधु की चेतना धर्ममय होनी चाहिए।

चातुर्मास सम्पन्नता की ओर है। चातुर्मास व्यवस्था समिति व अन्य लोगों को चातुर्मास प्रारंभ होने से पूर्व कितनी व्यवस्थाएं करनी पड़ती है। अनेक कार्यकर्ताओं का श्रम नियोजित होता है। अनेक संस्थाएं अपने कार्य करती है। इस चातुर्मास का आयोजन काफी अच्छा प्रतीत हो रहा है और अहमदाबाद चातुर्मास व्यवस्था समिति द्वारा आयोजित यह चातुर्मास काफी अच्छे ढंग से सम्पन्नता के निकट है। अपने व्यक्तिगत कार्यों को छोड़कर चातुर्मास व्यवस्था में लगना एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सेवा का कार्य होता है। अहमदाबाद साधु-साध्वियों की चिकित्सा का भी एक अच्छा केन्द्र बन गया है। यहां का श्रावक समाज इस संदर्भ में बहुत ही जागरूक है। अच्छे समर्पण भाव से इस ओर ध्यान देते हैं।

मंगल प्रवचन से पूर्व मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्य प्रवर की सन्निधि में अहमदाबाद वासियों की ओर से मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम अहमदाबाद ज्ञानशालाओं की प्रशिक्षिकाओं ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाओं की प्रस्तुति दी। इसके पश्चात् अनेक श्रद्धालुओं ने अपनी श्रद्धासिक्त भावनाएं प्रस्तुत की। प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष नरेन्द्र पोरवाल ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ किशोर मंडल अहमदाबाद ने गीत के माध्यम से, उपासक श्रेणी की ओर से डालमचन्द नौलखा व अन्य उपासक श्रेणी के सदस्यों ने गीत के संगान के माध्यम से भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्य प्रवर ने मंगल प्रवचन के पश्चात् चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी के क्रम को संपादित करते हुए चारित्रात्माओं को अनेक प्रेरणाएं प्रदान की। नवदीक्षित साध्वियां - साध्वी भावनाप्रभा जी, साध्वी मंथनप्रभाजी, साध्वी कल्याणप्रभाजी, साध्वी ऋतम्भराप्रभाजी, व साध्वी रहस्यप्रभाजी ने लेख पत्र का उच्चारण किया। आचार्यश्री ने पांचों साध्वियों को दो-दो कल्याणक बख्शीश किए। तदुपरान्त उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

मुनि चौथमलजी द्वारा रचित कालू कौमुदी की हिन्दी व्याख्या समणी हिमप्रज्ञा जी द्वारा की गई, जिसकी दो पुस्तकों को आचार्यश्री के समक्ष जैन विश्व भारती के द्वारा लोकार्पित किया। आचार्य प्रवर ने मंगल प्रेरणा प्रदान की। साध्वी सरस्वतीजी ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

मंगल भावना के द्वितीय चरण में प्रवास व्यवस्था समिति की सहमंत्री लाड बाफना समेत अनेक श्रद्धालुओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ युवक परिषद्-अहमदाबाद व तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम-अहमदाबाद के सदस्यों ने पृथक-पृथक गीतों का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

छोटे-छोटे व्रत से आध्यात्मिक जीवन को करें बड़ा : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
07 नवम्बर, 2025

अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वांग्मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य जीवन में धर्म की आराधना करना बहुत अच्छा कार्य होता है। अपने आचरणों में भी धर्म हो और जप, स्वाध्याय, सामायिक, त्याग, प्रत्याख्यान, विनय, भक्ति, इन रूपों में भी धर्म की आराधना हो।

धर्म दो प्रकार का हो जाता है - पहला कालिक धर्म, दूसरा कालातीत धर्म। कालिक धर्म वह है जिसमें समय लगाना पड़े और कालातीत धर्म वह है जिसमें अलग से समय लगाने की जरूरत नहीं होती है। उदाहरणार्थ, सामायिक करना धर्म है, परंतु इसमें एक मुहूर्त का समय लगाएंगे तो सामायिक होगी। अष्ट प्रहरी पौषध करना है तो उसमें अष्ट प्रहर या कुछ अधिक समय लगाएंगे तब पौषध होगा। इसी प्रकार माला जपने, संतों के दर्शन करने या प्रवचन सुनने के लिए समय लगाना होगा। यह सारा धर्म कालिक धर्म हो गया जिसमें समय लगाना पड़ता है। दूसरा कालातीत धर्म में समय लगाने की विशेष अपेक्षा नहीं रहती, जैसे उपवास, पौरसी आदि अन्य कार्य करते हुए भी संपन्न हो जाते हैं, अतः ये एक प्रकार से कालातीत धर्म हैं। चोरी का त्याग, हिंसा का त्याग, आदि ऐसे धर्म हैं जिनमें अलग से समय नियोजित करने की आवश्यकता नहीं है। संकल्प कर लिया और उसके पालन के प्रति मनोबल मजबूत कर लिया तो आपके धर्म की अनुपालना हो रही है। दुकान में किसी ग्राहक को नहीं ठगना, कूट-माप तौल, आदि से बचने का प्रयास करना। ऑफिस आदि में ईमानदारी रखना, झूठ का त्याग कर लेना आदि कालातीत धर्म हो जाता है।

परमपूज्य आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन चलाया। अणुव्रत के

छोटे-छोटे नियम जीवन में आ जाते हैं जैसे नशा नहीं करना, प्रामाणिकता रखना, सांप्रदायिक सहिष्णुता रखना, आदि। इनके लिए कोई अलग से समय निकालने की जरूरत नहीं होती, अन्य कार्यों के साथ भी इनका पालन हो सकता है। ईमानदारी के लिए व्यक्ति झूठ नहीं बोले, चोरी नहीं करे, छल-कपट नहीं करे। यह त्रि-आयामी ईमानदारी है। ईमानदारी रखने वाले व्यक्ति के जीवन में परेशानियां भी आ सकती हैं परंतु ईमानदारी का रास्ता सीधा-सपाट है। अंत में विजय सत्य की ही होती है। ईमानदारी के लिए हिम्मत और निर्भीकता होनी चाहिए। शास्त्र कहा गया है कि झूठ बोलना सभी साधुओं के लिए निंदनीय है। ईमानदारी एक प्रशंसनीय गुण है। गृहस्थ जीवन में भी जितना संभव हो सके, झूठ बोलने आदि से बचकर धर्म के पथ पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के पश्चात् मुनि अर्हम् कुमार जी ने अंग्रेजी भाषा में 'धर्म के महत्व' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। आचार्यश्री ने मुनि अर्हम् कुमार जी को अगले 14 व 15 नवम्बर को अगले विषय पर अंग्रेजी भाषा में भाषण देने की प्रेरणा प्रदान करते हुए सात कल्याणक बख्शीस किए। तदुपरांत पूज्य गुरुदेव ने समणियों को भाषण के लिए विभिन्न विषय प्रदान किए।

चन्द्रप्रभलब्धि धाम के मुख्य ट्रस्टी जिग्नेश भाई मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। आचार्य प्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

अनुशासन के प्रति जागरूकता

मुनि खेतसीजी आचार्य भिक्षु के दायें हाथ थे। एक बार सिरियारी में उन्होंने आचार्य भिक्षु से कहा—मुनि सिंघजी (जो संघ से पृथक् हो गए हैं) को वापिस लेने मांढा गांव जा रहा हूं।

आचार्य भिक्षु बोले—वह गण में रहने योग्य नहीं है। ऐसा कहने पर भी मुनि खेतसीजी का उन्हें लाने का आग्रह रहा। वे अपनी भावना को रोक नहीं सके और उन्हें लाने के लिए तैयार भी हो गए।

आचार्य भिक्षु बोले—यदि तुमने उसके साथ सम्बन्ध जोड़ा तो हमारे साथ तुम्हारा सम्बन्ध नहीं रहेगा।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

सामायिक व्रत

श्रावक के श्रावकत्व के पोषण के लिए आवश्यक। छह आवश्यक में पहले स्थान पर स्थापित- 'सामायिक' यह व्रत सीधे आत्मा से जुड़ा है। 'समयस्य भावं सामायिकं'- जो समय अर्थात् आत्मा से हो, आत्मा के लिए हो वह सामायिक है। सामायिक एक ऐसे रक्षा कवच का कार्य करती है जो पाप कर्म रूपी वायरस को आत्मा रूपी सोफ्टवेयर के लिए एन्टी-वायरस का काम करती है। सामायिक के अनेक फायदे भी हैं- स्थूल दृष्टि से हम देखें तो शरीर की स्थिरता, वाणी का संयम, सावद्य भाषा का वर्जन, एक मुहूर्त के लिए साधुवत् बन जाना। और यदि हम थोड़ा सूक्ष्म में जाएं तो बहुत से इसकी विशेषताएं है, फायदे है। मानसिक चंचलता में कमी, सावध प्रवृति में न्यूवता, पवित्र भावों में संचार, पापकारी प्रवृति में कमी, आश्रव का निरोध इससे भव भ्रमण के चक्र में न्यूवता आ जाती है। सामायिक 32 दोषों को टाल कर की जाती है। मन में 10, वचन के 10, काया के 12। तब जाकर एक शुद्ध सामायिक होती है। एक प्रश्न हुआ की सामायिक का अधिकारी कौन तो उत्तर दिया गया जो समो सव्व भूएसु-तसेसु थावरेसु य तस्य सामारयं हवइ- डह केवली भासियं। सभी प्राणियों के प्रति सम भाव रखने वाले के सामायिक होती है। ऐसा केवली प्रज्ञण्त है। अतः श्रावक अनवरत सामायिक की आराधना करें।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह रात्रि भोजन त्याग करें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

हम भगवान् के घर के संदेशवाहक हैं

केलवा में परिषद जुड़ी हुई थी। वहां के जागीरदार ठाकर मोखमसिंहजी ने स्वामीजी से पूछा– 'गांव-गांव से आपके पास प्रार्थनाएं आती हैं। बहुत पुरुष और स्त्रियां आपको चाहते हैं। वे आपको देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं उन्हें बहुत प्रिय लगते हैं। इसका क्या कारण? आपमें ऐसा कौन-सा गुण है?'

तब स्वामीजी बोले– 'कोई साहूकार परदेश गया हुआ था। उसने अपने घर संदेशवाहक भेजा और खर्चे के लिए रुपये पैसे भेजे। सेठाणीजी संदेशवाहक को देखकर बहुत राजी हुई। गरम पानी से उसके पैर धुलाए। भली-भांति खाना पका कर उसे खिलाया। उसके पास बैठकर अपने पति के समाचार पूछने लगीं– 'साहजी शरीर से कैसे हैं– उनका स्वास्थ्य कैसा है? उनके शरीर में सुख-शांति है? साहजी कहां सोते हैं? कहां बैठते हैं?' संदेशवाहक जैसे-जैसे समाचार बतलाता है, वैसे-वैसे वह सुनकर बहुत राजी होती है। पर संदेशवाहक को देख प्रसन्न होने का कारण यह है कि वह उसके पति का समाचार उसे बतलाता है।

'इसी प्रकार हम भगवान् के गुण और संदेश लोगों को बतलाते हैं। संसार से मुक्त होने का मार्ग बतलाते हैं। यही कारण है कि पुरुष और स्त्रियां हमसे बहुत प्रसन्न रहती हैं।'

क्या आप जानते हैं?

बर्फ, फ्रूटी, बिस्कुट आदि कवरसहित बहरना निषिद्ध है।

ज्ञान और श्रद्धा से हो चारित्र और तप का विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

ताजपुर।
08 नवम्बर, 2025

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना सहित लगभग 14 कि.मी. का विहार कर ताजपुर — स्वामीनारायण इंस्टिट्यूट ऑफ नर्सिंग पहुंचे। अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि चार शब्द हैं — ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। ज्ञान से व्यक्ति पदार्थों को जानता है, दर्शन से श्रद्धा करता है, चारित्र से कर्म के आगमन को रोकता है और तपस्या से आत्मा का शोधन करता है। ज्ञान एक पवित्र तत्व है। हमारी चेतना में अनंत ज्ञान स्वाभाविक रूप में है, परंतु वह सारा ज्ञान अभी प्रकट नहीं है। सामान्य व्यक्ति का थोड़ा ज्ञान प्रकट होता है, बाकी ज्ञान आवृत रहता है। ज्ञान अध्यात्म विद्या और लौकिक विद्या — दोनों का ही होता है। आज कितने स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय व अन्य कई विद्या के उपक्रम विश्व में संचालित हैं, और वहां कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं, कितने शिक्षक पढ़ाते हैं और कितने लोग प्रबंधन संभालते हैं, तथा ज्ञान का आदान-प्रदान भी होता है। भूगोल, खगोल, विज्ञान, गणित, विभिन्न भाषाएं आदि लौकिक विद्याओं का ज्ञान होता है। इस ज्ञान का भी अपना महत्व है। इसके साथ-साथ विद्यार्थियों को यदा-कदा अध्यात्म विद्या का भी ज्ञान प्रदान करने का प्रयास होना चाहिए, ताकि ईमानदारी, अहिंसा आदि अच्छे तत्वों का संस्कार विद्यार्थियों में उभर सके। इसके साथ ही योग और ध्यान के प्रयोग भी करवाए जाएं तो संभव है विद्यार्थियों में चारित्रिक विकास भी हो सकेगा। भूगोल, खगोल आदि का ज्ञान एक पक्षीय है, साथ में संस्कारों का ज्ञान भी होना चाहिए। शिक्षा संस्कारयुक्त शिक्षा होनी चाहिए। लौकिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षा भी दी जानी चाहिए। जो संस्थान धार्मिक उपक्रमों से जुड़े हुए हैं, वहां तो आशा की जा सकती है कि अच्छे संस्कारों की शिक्षा भी दी जाती होगी।

अध्यात्म विद्या का अच्छा ज्ञान हो जाए तो बच्चों में अच्छे संस्कारों का भी विकास हो सकता है। आचार्यश्री ने कहा कि आज यहां आना हुआ है और बाबाजी से भी मिलना हो गया है। संतों के पास संतों का आना और सत्संग का होना बड़ा ही सुखदायक होता है। स्वामीनारायण संप्रदाय के संत प्रेमस्वरूप स्वामी ने भी अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : मंगल विहार

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत